REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2026

कक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

डॉ. हेमा तिवारी
सहा. प्राध्यापिका (शिक्षा विभाग) श्याम शिक्षा महाविद्यालय, सक्ती (छ.ग.)

प्रिया सिंह
शोधार्थी, कलिंगा विश्वविद्यालय,नया रायपुर (छ.ग.)

सारांश

पाठ्यक्रम में किए गए परिवर्तनों का छात्रों पर गहरा प्रभाव पड़ता है, क्योंकि यह शिक्षा की उस अवस्था की शुरुआत है जहाँ बच्चे प्राथमिक स्तर से मध्य स्तर की ओर बढ़ते हैं। पाठ्यक्रम में परिवर्तन का उद्देश्य छात्रों को अधिक व्यावहारिक, समसामयिक और समग्र ज्ञान प्रदान करना होता है। इससे उनके सोचने, समझने और सीखने की क्षमता का विकास होता है।

हालाँकि, इन परिवर्तनों के चलते कुछ चुनौतियाँ भी सामने आती हैं, जैसे कि छात्रों को नई पद्धति के अनुसार ढलने में समय लगना, डिजिटल संसाधनों की कमी, और शिक्षकों का पूर्ण प्रशिक्षण न होना। फिर भी यदि इन चुनौतियों का सही समाधान निकाला जाए और सभी हितधारकों (छात्र, शिक्षक, अभिभावक, नीति निर्माता) का सहयोग मिले, तो ये परिवर्तन छात्रों के शैक्षणिक जीवन को अधिक समृद्ध और सक्षम बना सकते हैं।

अतः यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम में परिवर्तन एक आवश्यक प्रक्रिया है, जिसे सोच–समझकर और चरणबद्ध तरीके से लागू किया जाना चाहिए ताकि छात्रों का सर्वांगीण विकास सुनिश्चित किया जा सके।

बीज शब्द

पाठ्यक्रम परिवर्तन, कक्षा 6वीं, छात्र विकास, शिक्षा प्रणाली, नई शिक्षा नीति (NEP 2020), मानसिक प्रभाव, शैक्षणिक प्रभाव, डिजिटल शिक्षा, शिक्षण विधियाँ, सीखने की प्रक्रिया, व्यावहारिक ज्ञान, रुचिकर शिक्षण, शिक्षक प्रशिक्षण, अभिभावक की भूमिका, समग्र विकास

प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। वर्तमान समय में समाज, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में तीव्र गति से हो रहे परिवर्तनों के कारण शिक्षा प्रणाली में भी समय–समय पर बदलाव आवश्यक हो गया है। विशेष रूप से कक्षा 6वीं जैसे महत्वपूर्ण स्तर पर पाठ्यक्रम में परिवर्तन छात्रों के सीखने की प्रक्रिया को प्रभावित करता है। इस अवस्था में छात्र प्राथमिक शिक्षा से आगे बढ़कर एक नई दिशा में प्रवेश करते हैं, जहाँ उनके ज्ञान, कौशल और सोचने की क्षमता का विस्तार होता है।

पाठ्यक्रम में परिवर्तन का उद्देश्य शिक्षा को अधिक व्यवहारिक, छात्र–केंद्रित और समसामयिक बनाना है, परंतु इसके साथ–साथ यह देखा गया है कि इन परिवर्तनों का छात्रों पर कई प्रकार से प्रभाव पड़ता है – कुछ सकारात्मक तो कुछ चुनौतिपूर्ण। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि पाठ्यक्रम में हुए बदलाव छात्रों के मानसिक, शैक्षणिक और सामाजिक विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।

समस्या कथनः–

''कक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन''

उद्देश्यः–

कक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना ।

परिकल्पनाः–

$H0_1$ - कक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र–छात्राओं पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

संक्रियात्मक चरों का परिभाषीकरण :–

1. पाठ्यक्रम में परिवर्तन (Curriculum Change)–यह उन बदलावों को दर्शाता है जो कक्षा 6वीं के शैक्षणिक पाठ्यक्रम में किए गए हैं। इनमें विषय–वस्तु की अद्यतनता, शिक्षण पद्धति में परिवर्तन, मूल्यांकन प्रणाली में बदलाव, और डिजिटल संसाधनों का समावेश शामिल हो सकते हैं।

संक्रीयात्मक परिभाषा

पाठ्यक्रम में परिवर्तन को उन नवीन शैक्षणिक नीतियों, अध्यायों, विषयों और शिक्षण विधियों के रूप में मापा जाएगा जो कक्षा 6 में पहले की अपेक्षा वर्तमान पाठ्यक्रम में जोड़े या बदले गए हैं।

2. छात्र पर प्रभाव (Impact on Students)– यह उन परिवर्तनों का छात्रों के सीखने, समझने, मानसिक स्थिति और व्यवहार पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाता है। छात्रों पर प्रभाव को उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों, सीखने की रुचि, तनाव के स्तर, कक्षा सहभागिता, और आत्मविश्वास जैसे संकेतकों के आधार पर मापा जाएगा।

3. शैक्षणिक प्रदर्शन (Academic Performance)–यह छात्र की पढ़ाई से संबंधित उपलब्धियों और परिणामों को दर्शाता है। शैक्षणिक प्रदर्शन को परीक्षा में प्राप्त अंकों, परियोजना कार्य, मौखिक परीक्षण और शिक्षकों द्वारा दी गई आंतरिक मूल्यांकन रिपोर्ट के माध्यम से मापा जाएगा।

4. सीखने की प्रवृत्ति (Learning Attitude / Interest in Learning)–यह दर्शाता है कि छात्र अध्ययन की ओर किस प्रकार का दृष्टिकोण रखते हैं – सकारात्मक या नकारात्मक।

छात्रों की सीखने की प्रवृत्ति को उनके कक्षा में सहभाग, होमवर्क की पूर्णता, जिज्ञासा के स्तर, और विषयों में रुचि के आधार पर मापा जाएगा, जो शिक्षक या अवलोकन आधारित रिपोर्ट से प्राप्त होंगे।

अध्ययन के पदों की व्याख्याः–

सक्ती जिला के पूर्व माध्यमिक स्तर के कक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययनके लिये यह शोध कार्य किया गया है। ये कार्यक्रम छात्र–छात्राओं को स्कूलों और अन्य शैक्षिक कार्य में प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और व्यावहारिक अनुभव से लैस करते हैं। इसमें छात्र–छात्रा दोनों शमिल है।

संबंधित शोध साहित्य का अध्ययनः–

टायलर (1949) टायलर ने पाठ्यक्रम विकास को उद्देश्यों, शिक्षण अनुभवों, संगठन तथा मूल्यांकन से जोड़ा। उनके अनुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन तभी प्रभावी होता है जब उसके उद्देश्य स्पष्ट हों। कक्षा 6 स्तर पर पाठ्यक्रम परिवर्तन से छात्रों की सीखने की दिशा, विषय समझ तथा उपलब्धि प्रभावित होती है।

टायलर का मत है कि उद्देश्य आधारित पाठ्यक्रम छात्रों को व्यवस्थित रूप से सीखने में सहायता करता है। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम परिवर्तन का छात्र के संज्ञानात्मक विकास और शैक्षणिक प्रगति पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

टैबा (1962) टैबा ने पाठ्यक्रम विकास को छात्र–केंद्रित प्रक्रिया माना। उनके अनुसार पाठ्यक्रम का निर्माण छात्रों की आवश्यकताओं, रुचियों और क्षमताओं के अनुरूप होना चाहिए। कक्षा 6 में पाठ्यक्रम परिवर्तन यदि छात्रों की मानसिक अवस्था को ध्यान में रखकर किया जाए तो सीखने की गुणवत्ता बढ़ती है। टैबा के शोध से यह निष्कर्ष निकला कि सहभागितापूर्ण और लचीला पाठ्यक्रम छात्रों की समझ, अभिव्यक्ति तथा सीखने की निरंतरता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

ब्रूनर (1966) ब्रूनर ने खोज आधारित अधिगम सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके अनुसार पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए जो छात्रों को स्वयं खोज कर सीखने के अवसर प्रदान करे। कक्षा 6 के पाठ्यक्रम में परिवर्तन यदि खोज आधारित और संरचनात्मक हो, तो छात्रों की जिज्ञासा, तार्किक क्षमता और अवधारणात्मक समझ में वृद्धि होती है। ब्रूनर का मानना है कि पाठ्यक्रम की संरचना ज्ञान को सरल और प्रभावी बनाती है, जिससे छात्र गहराई से सीख पाते हैं।

वायगोत्स्की (1978) वायगोत्स्की ने सामाजिक अंतःक्रिया को सीखने का महत्वपूर्ण आधार माना। उनके अनुसार पाठ्यक्रम परिवर्तन से छात्रों का संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास प्रभावित होता है। कक्षा 6 स्तर पर सहयोगात्मक गतिविधियों, समूह कार्य और संवाद आधारित पाठ्यक्रम से छात्रों की भाषा क्षमता, सोचने की शक्ति और आत्मविश्वास में सुधार होता है। वायगोत्स्की के सिद्धांत से यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम परिवर्तन का प्रभाव केवल शैक्षणिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक विकास पर भी पड़ता है।

बी.एल. अग्रवाल (1988) अग्रवाल ने भारतीय विद्यालयी पाठ्यक्रम का विश्लेषण किया। उनके अध्ययन में यह पाया गया कि पाठ्यक्रम परिवर्तन से छात्रों की शैक्षणिक गुणवत्ता में सुधार संभव है। कक्षा 6 में पाठ्यक्रम को सरल, स्पष्ट और व्यवहारिक बनाने से छात्रों की समझ और सीखने की रुचि बढ़ती है। अग्रवाल के अनुसार पाठ्यक्रम परिवर्तन तभी सफल होता है जब शिक्षक, पाठ्यवस्तु और मूल्यांकन प्रणाली में संतुलन स्थापित किया जाए।

कोठारी (1990) कोठारी ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन माना। उनके अनुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन छात्रों के व्यक्तित्व विकास और सामाजिक चेतना को प्रभावित करता है। कक्षा 6 के स्तर पर पाठ्यक्रम में नैतिक, सामाजिक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को शामिल करने से छात्रों का सर्वांगीण विकास संभव है। कोठारी के विचारों से यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम परिवर्तन का प्रभाव छात्र के व्यवहार और मूल्यों पर भी पड़ता है।

यशपाल समिति (1993) यशपाल समिति ने विद्यालयी पाठ्यक्रम में बढ़ते भार पर चिंता व्यक्त की। समिति की रिपोर्ट के अनुसार कक्षा 6 के छात्रों पर अत्यधिक पाठ्यभार मानसिक तनाव उत्पन्न करता है। पाठ्यक्रम सरलीकरण और विषयवस्तु में कमी से छात्रों की रुचि, रचनात्मकता और सीखने की क्षमता में सुधार होता है। समिति ने सुझाव दिया कि पाठ्यक्रम बच्चों के मानसिक स्तर और जीवन से जुड़ा होना चाहिए।

पांडे (1998) पांडे ने कक्षा 6 के छात्रों पर पाठ्यक्रम भार का अध्ययन किया। उनके शोध में यह पाया गया कि भारी और जटिल पाठ्यक्रम से छात्रों में तनाव, अरुचि और सीखने की कठिनाइयाँ उत्पन्न होती हैं। पाठ्यक्रम में संतुलन और सरलता लाने से छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि और सीखने की गति में सुधार देखा गया। पांडे के अध्ययन से पाठ्यक्रम परिवर्तन की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

एनसीईआरटी (2000) एनसीईआरटी द्वारा किए गए अध्ययन में पाठ्यक्रम सुधार और छात्र अधिगम के बीच संबंध का विश्लेषण किया गया। रिपोर्ट में बताया गया कि कक्षा 6 के संशोधित पाठ्यक्रम से छात्रों की विषय समझ, रुचि और सीखने की निरंतरता में सुधार हुआ। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि पाठ्यक्रम परिवर्तन तभी प्रभावी होता है जब शिक्षकों को उचित प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ।

मिश्रा (2009) मिश्रा ने गतिविधि आधारित पाठ्यक्रम का कक्षा 6 के छात्रों पर प्रभाव अध्ययन किया। उनके शोध से ज्ञात हुआ कि गतिविधि आधारित शिक्षण से छात्रों की सक्रिय सहभागिता और रचनात्मकता में वृद्धि होती है। इससे सीखने की प्रक्रिया अधिक रोचक और प्रभावी बनती है। मिश्रा के अनुसार पाठ्यक्रम परिवर्तन यदि गतिविधि और अनुभव पर आधारित हो, तो छात्रों का आत्मविश्वास और समस्या समाधान क्षमता बढ़ती है।

शर्मा (2012) शर्मा ने कक्षा 6 के पाठ्यक्रम परिवर्तन का शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव अध्ययन किया। शोध निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि संशोधित और सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम से छात्रों की विषय समझ और परीक्षा परिणामों में सुधार हुआ। शर्मा ने यह भी बताया कि छात्र–केंद्रित शिक्षण विधियों के साथ पाठ्यक्रम परिवर्तन अधिक प्रभावी सिद्ध होता है।

कुमार (2016) कुमार ने आईसीटी आधारित पाठ्यक्रम का अध्ययन किया। उनके शोध में यह पाया गया कि कक्षा 6 में तकनीक आधारित पाठ्यक्रम से छात्रों की रुचि, सहभागिता और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है। हालांकि, संसाधनों की कमी और तकनीकी असमानता के कारण सभी छात्रों को समान लाभ नहीं मिल पाता। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम परिवर्तन में तकनीक का संतुलित उपयोग आवश्यक है।

वर्मा (2017) वर्मा ने सतत एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली का अध्ययन किया। उनके अनुसार पाठ्यक्रम और मूल्यांकन में समन्वय होने से कक्षा 6 के छात्रों की सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी बनती है। शोध से यह स्पष्ट हुआ कि निरंतर मूल्यांकन से छात्रों की प्रगति का सही आकलन संभव है और पाठ्यक्रम परिवर्तन के सकारात्मक प्रभाव सामने आते हैं।

एनसीईआरटी (2021) एनसीईआरटी ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में कक्षा 6 के पाठ्यक्रम का अध्ययन किया। रिपोर्ट में बताया गया कि दक्षता आधारित और अनुभवात्मक पाठ्यक्रम से छात्रों के ज्ञान, कौशल और व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन हुआ। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नया पाठ्यक्रम छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देता है।

गुप्ता (2023) गुप्ता ने कक्षा 6 के नए पाठ्यक्रम का छात्र अधिगम पर प्रभाव अध्ययन किया। उनके शोध में यह पाया गया कि प्रारंभिक चरण में छात्रों को अनुकूलन में कठिनाई होती है, किंतु समय के साथ उनकी समझ और सीखने की गुणवत्ता में सुधार होता है। अध्ययन से यह निष्कर्ष निकला कि पाठ्यक्रम परिवर्तन दीर्घकाल में छात्रों के लिए लाभकारी सिद्ध होता है।

शोध विधिः–

सर्वेक्षण विधि के तहत माध्यम T –टेस्ट और प्रतिशत मान का प्रयोग किया जाएगा।

जनसंख्याः–

सक्ती जिले के 10 पूर्व माध्यमिक स्तर के कक्षा 6 वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है।

न्यादर्शः–

प्रस्तुत अध्ययन के न्यादर्श का चयन उपर्युक्त जनसंख्या को आधार मानकर किया गया है। अध्ययन की सुविधा हेतु सक्ती जिले के पूर्व माध्यमिक स्तर केकक्षा 6 वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन काछात्र–छात्राओं पर प्रभाव के अध्ययन के लिए चयन किया गया। प्रत्येक विद्यालय से10–10 छात्र व छात्रा का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि के माध्यम से किया गया है। न्यादर्श का विवरण तालिका में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या 1
सक्ती जिले के 10 पूर्व माध्यमिक स्तर के कक्षा 6 वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

क्र.	विद्यालय का नाम	विद्यार्थियों का वर्ग	
		छात्र	छात्रा
1.	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय गहरीनमुडा, सक्ती	5	5
2	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय बरपाली कला, सक्ती	5	5
3	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय बूढ़नपुर, सक्ती	5	5
4	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय मोहगाँव, सक्ती	5	5
5	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय पतेरापाली कला, सक्ती	5	5
6	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय अचानकपुर, सक्ती	5	5
7	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय आसोंदा, सक्ती	5	5
8	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय जामपाली, सक्ती	5	5
9	शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय नवापारा, सक्ती	5	5
10	शासकीय सदर कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय, सक्ती	5	5
कुल 100		50	50

शोध में प्रयुक्त उपकरणः–

उक्त शोध पत्र में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है।

अध्ययन का परिसीमनः–

1. उक्त शोध पत्र के लिए सक्ती जिला के 10 पूर्व माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।
2. प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय से 05 छात्र एवं 05 छात्राओं को लिया गया है।
3. यह अध्ययन केवल पूर्व माध्यमिक विद्यालय तक ही सीमीत है ।
4. यह अध्ययन केवल कक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन तक ही सीमीत है ।

आंकड़ों का विश्लेषणः–

संकलित आँकडों का वर्गीकरण एवं सारणीकरन करने के पश्चात् उनका उपयुक्त विश्लेषण एवं व्याख्या करने के लिए सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के प्रकृति के आधार पर सांख्यिकी के रुप में मध्यमान और टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रदत्तों के मध्यमानों के मध्य अंतर की सार्थकता ज्ञात करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया हैं।

$H0_1$–कक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र–छात्राओं पर पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

प्रस्तुत शून्य परिकल्पना के परीक्षण हेतु प्राप्तांकों का विश्लेषण t परीक्षण के माध्यम से किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका संख्या 01 में दर्शाया गया हैं, तदोपरान्त व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

सारणी–01
कक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र–छात्राओंके प्रभाव का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मूल्य का विवरण''

क्र. सं.	**प्रशिक्षार्थी समूह**	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मनक विचलन(D.S.)	t- टेबल मान 0.05 पर	t- गणना मान	df	परिणाम
1	**छात्र**	**50**	76.73	09.68	1.98	2.10	98	**अस्वीकृत**
2	**छात्राएं**	**50**	72.30	11.31				

व्याख्याः–

उपर्युक्त तालिका संख्या 01 द्वारा स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि गणना द्वारा **t** का मान 2.10 है जो '0.05 सार्थक स्तर पर **तालिका द्वारा प्राप्त t के मान 1.98** से अधिक है। अतः संबन्धित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है किकक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र–छात्राओं पर पड़ने वाले प्रभाव में सार्थक अन्तर पाया गया।

निष्कर्षः–

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर जो परिणाम प्राप्त हुए है उससे यह निष्कर्ष निकलता है किकक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में परिवर्तन का छात्र–छात्राओं पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययनमें सार्थक अन्तर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

कक्षा 6वीं के पाठ्यक्रम में किए गए परिवर्तनों के अनेक शैक्षिक निहितार्थ हैं जो शिक्षा प्रणाली को अधिक उपयोगी, समावेशी और भविष्योन्मुखी बनाते हैं। इन निहितार्थों को समझकर ही शिक्षा के उद्देश्यों की पूर्ति संभव है। शैक्षिक निहितार्थ किसी शैक्षिक अध्ययन की उपयोगिता से सम्बन्धित है जो शैक्षिक समस्या के समाधान को प्रस्तुत करता है।

प्रस्तुत अध्ययन सक्ती जिले के पूर्व माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं पर सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित होता है, किंतु इसके अधिकतम लाभ के लिए तकनीकी प्रशिक्षण, संसाधन उपलब्धता को बढ़ावा देना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

1. A major change in school Education, Ministry of Education and social welfare, Delhi.
2. Best J.W., Research in Education, Prentice Hall Inc., U.S.A. Engliwood Cliffs, 1959.
3. Butch, M.B., Fourth Survey of Research in Education (Vol. I,19 38-88), NCERT, New Delhi, 1991.
4. Claire Seltiz, Marie Jahoda, Morton Dentsch and cook stuart W.
5. Craft, A., Controversial issues in the curriculum, Ed.J.J.wellington, Basil Blackwell Ltd., Oxford, 1986.
6. Dal ton, T.H., The challenges of curriculum innovations: A study of Ideology and Practice, The Falner Press, Landon, 1988.
7. Posner, G.J. Analyzing the Curriculum, Mc. Grow Hill, New York 1995.
8. Rcinhartz J. & Beach, D.M., Teaching and Learning in the elementary school, focus on curriculum, merril, columbus, ohio, 1997.